1

कवि परिचय-1

संस्कृत साहित्याकाश में वाल्मीकि और वेदव्यास आर्ष कवि के रूप में बहुत प्रसिद्धि है। काव्य कैसा होना चाहिए, इसे निर्धारित करने के लिए कवियों के द्वारा वाल्मीकि रचित रामायण को ही मानदण्ड के रूप में स्वीकार किया जाता है। इसलिए ही वाल्मीकि आदिकवि एवं रामायण आदि काव्य माना गया है। रामायण न केवल काव्य ग्रन्थ है अपितु धर्म ग्रन्थ भी है। रामायण ही मानव जीवन का स्वरूप है। रामायण ही श्रेष्ठ मार्ग प्रदर्शक रूप ज्योति प्रकाश है।

महाभारत भी रामायण के समान हमारे राष्ट्र का इतिहास ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ का उद्देश्य एकमात्र कौरव पाण्डवों के युद्ध का वर्णन नहीं अपितु भारतीय धर्म का सम्पूर्णता के साथ सविस्तार चित्रण करना भी है। महाभारत के प्रणेता वेदव्यास हैं।

संस्कृत साहित्य में आज तक उपलब्ध नाटककारों में भास सबसे प्राचीन नाटककार हैं। संस्कृत साहित्य में भास के बहुत से ग्रन्थ विद्यमान हैं। महाकवि कालिदास आदि भी भास को ही श्रेष्ठ मानते हैं। आज प्राय: तेरह नाटक भास के नाम से विद्यमान हैं। इस पाठ में वाल्मीकि, वेदव्यास और भास के देश काल एवं कृतियों के विषय में चर्चा की गई है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- महाकवियों के विषय में संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर पाने में;
- वाल्मीकि, वेदव्यास एवं भास के देश, काल और कृतियों के विषय में जान पाने में;
- रामायण एवं महाभारत महाकाव्य के विषय में जानकारी प्राप्त कर पाने में;
- रामायण एवं महाभारत की विषय वस्तु जानने में समर्थ हो पाने में;
- भास की रचनाओं को जान पाने में।

1.1 वाल्मीकि-रामायण

संस्कृत साहित्य में रामायण पद से वाल्मीकि द्वारा विरचित रामायण ही प्रसिद्ध है। भारतीयों के द्वारा रामायण को आदिकाव्य और उसके प्रणेता वाल्मीकि को आदिकवि कहा जाता है। रामायण से प्राचीन संस्कृत भाषा में निबद्ध काव्यलक्षणोपपन्न कोई भी ग्रन्थ नहीं दिखाई देता। रामायण में न केवल युद्ध ही वर्णित है, अपितु रूपक-उपमा आदि अलंकारों से युक्त भाषा में प्रकृति का भी वर्णन किया गया है। इसलिए रामायण को काव्य के रूप में स्वीकार करते हैं न कि वीरगाथा मात्र और न ही शुष्क इतिहास मात्र। संसार में कोई भी काव्य रामायण की समता करने में समर्थ नहीं है। इस महाकाव्य के प्रणेता वाल्मीकि हैं। ऐसे आदिकवि के देश, काल एवं कृति के विषय में चिंतन अत्यन्त कष्ट साध्य है। फिर भी अन्य ग्रन्थों को देख कर इनके देश एवं काल आदि का अनुमान लगाया जाता है।

1.1.1 काल-समय

वाल्मीकि की स्थिति काल के विषय में आज भी स्पष्ट रुप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता फिर भी यह अनुमान है कि वे महर्षि व्यास से भी प्राचीन थे। इसका प्रमाण है कि रामायण में महाभारत वर्णित किसी भी पात्र का नाम उपलब्ध नहीं है, अपितु महाभारत में राम कथा का वर्णन प्राप्त होता है। महाभारत के सातवें पर्व में लंका काण्ड के दो पद्य प्राप्त होते हैं।

बौद्ध धर्म के उदय से पहले से ही वाल्मीकि थे। रामायणी रामकथा कुछ परिवर्तन के साथ दशरथजातक नाम से जातक ग्रन्थ के अंग भाव को प्राप्त है। वहां पालिभाषा में अनूदित पद्य भी प्राप्त हैं। शिकार करते समय दशरथ ने श्रवण कुमार को मार दिया था। यह राम कथा सामजातक में वर्णित है। बौद्ध साहित्य के विशेषज्ञ सिल्वॉलेवी का स्पष्ट मत है कि सद्धर्मस्मृत्युपस्थान नामक बौद्धग्रन्थ का मूल अवश्य ही रामायण का ही है। इसी प्रकार याकोवि महोदय ने भी भाषा-विज्ञान के द्वारा बौद्धकाल के पूर्व में रामायण को माना है।

इन सभी प्रमाणों से रामायण की बुद्धपूर्वकालिकता सिद्ध होती है। अतः यह ज्ञात होता है कि बौद्धकाल से पूर्व भी वाल्मीकि थे।

रामायण में कौशल राज्य की राजधानी अयोध्या कही गयी है। बौद्धजन, यवन और पतंजलि ने कौशल राज्य की राजधानी साकेत को माना है। इससे सिद्ध होता है कि अयोध्या के वर्तमान अभ्युदय में साकेत के नामकरण से पूर्व ही रामायण की रचना हो चुकी थी।

जैन कवि विमलसूरि ने प्राकृत भाषा में ''पउमचरिआ'' नामक ग्रन्थ की रचना की जिसकी कथा रामचरित्र पर आधारित है। ''पउमचरिआ'' की रचना 62 ई0 में की गई। इससे ज्ञात होता है कि रामायण इससे प्राचीन है।

अजातशत्रु ने 500 ई0पू0 में पाटलिपुत्र की स्थापना की थी। इसी राजा ने शत्रुओं के आक्रमण से रक्षा के लिए गंगा एवं शोण नदी के संगम स्थल पर एक दुर्ग का निर्माण कराया था। रामायण में गंगा शोण के संगम से श्रीराम गमन का वर्णन है। किन्तु इस दुर्ग का उल्लेख नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि रामायण 500 ई0पू0 से पूर्व की रचना है।

रामायण में विशिला एवं मिथिला ये दो राज्य थे। बुद्ध के समय से दोनों नगरी वैशाली राज्य के अन्तर्गत वर्णित हैं। इससे ज्ञात होता है कि रामायण बुद्ध से प्राचीन थी।

रामायण में भारत के अनेक राजाओं द्वारा शासित अनेक छोटे राज्यों में विभक्त होने का वर्णन है। भारत की इस प्रकार की दशा बुद्ध के पूर्वकाल में थी। इससे भी ज्ञात होता है कि रामायण बुद्ध से प्राचीन थी।

इन सभी प्रमाणों से प्रतीत होता है कि रामायण की 500 ई0पू0 से पूर्व में रचना हो चुकी थी इसके बाद की रचना कदाचित् नहीं हो सकती। इसलिए वाल्मीकि भी 500 ई0पू0 से पूर्व में हुए थे।

1.1.2 कृति- (रचना)

वाल्मीकि ने रामायण की रचना की। वाल्मीकि के कवित्व ज्ञान के लिए रामायण ही पर्याप्त है। वाल्मीकि के द्वारा अपनी काव्य कला के प्रतिपादन के लिए जिन पात्रों का आधार किया उसमें राम का चरित्र है। उन्हीं के समान जिस भी कवि ने उन्हें आधार बनाया वह कवि सफलता को प्राप्त हुआ। रामायण में 24 हजार श्लोक हैं। अत: इसे ''चतुविंशतिसाहस्रीसंहिता'' भी कहा जाता है। गायत्री मंत्र में जितने अक्षर हैं उतने हजार रामायण में श्लोक हैं। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि रामायण के प्रत्येक हजारवें श्लोक के आदि अक्षर की शुरुआत गायत्री मंत्र के अक्षर से होती है। रामायण में 500 सर्ग हैं। इसमें 7 काण्ड हैं। बहुत से विद्वान उत्तरकाण्ड एवं बालकाण्ड के कुछ अंश प्रक्षिप्त मानते हैं। बालकाण्ड के प्रथम और तृतीय सर्ग में जो विषय सूची है वहां उत्तरोत्तरकाण्डवर्णित बालकाण्डगततदंशवर्णित विषय नहीं आते हैं। इस आधार पर वे प्रक्षिप्त कहे जाते हैं। याकोवि महोदय तो अयोध्याकाण्ड के आरम्भ से युद्धकाण्ड तक पांच काण्डों को ही वाल्मीकि कृत मानते हैं। लंकाकाण्ड के अन्त में ग्रन्थ की समाप्ति प्रतीत होती है। रामायण में सात खण्ड विद्यमान हैं। वहां बालाख्यकाण्ड के प्रथमखण्ड में राम के यौवन सुख का वर्णन है, और वहीं मुनि विश्वामित्र के साथ उसके आश्रम के प्रति गमन, यज्ञ के विघ्नकर्ता राक्षसों के हनन, जनक जापापाणिपीडन का वर्णन है। द्वितीयकाण्ड अयोध्याकाण्ड के शुरु में यौवराज्य पद के अभिषेक समारोह का उपक्रम, वहीं पर केकैयी द्वारा रचित चक्रव्यूह, राम का निर्वासन, रामविरह में दशरथ का प्राण त्याग आदि विषय वर्णित हैं। अरण्यकाण्ड नामक तृतीयकाण्ड में राम का दण्डकारण्य गमन, दण्डकारण्य में वातापिनामक राक्षस का हनन, रावण कृत मैथिली (सीता) हरण इत्यादि विषय सुशोभित हैं। किष्किन्धाकाण्ड नामक चतुर्थ काण्ड में राम की सुग्रीव के साथ मित्रता, बालि का वध तथा वानरों की सहायता से पवन पुत्र हनुमान द्वारा सीता की खोज आदि विषय वर्णित हैं। सुन्दरकाण्ड नामक पांचवे काण्ड में लंका द्वीप की सुन्दरता, रावण के महल का बलवत्चित्र का आकर्षक वर्णन, हनुमान

टिप्पणी

का सीता को सान्त्वना प्रदान करना, आदि विषय वर्णित हैं। युद्धकाण्ड नामक छठे अध्याय में राम का रावण को मारना लंका पर विजय आदि विषय विद्यमान है। उत्तरकाण्ड नामक सातवें काण्ड में नगर वासियों में सीता हरण के प्रसार से प्रजा द्वारा राम की निन्दा कथन, राम के आदेश से सीता को वनवास, सीता का शोक, वाल्मीकि के आश्रम में लव-कुश का जन्म, ग्रन्थ की परिसमाप्ति आदि का विस्तार से वर्णन है। इस प्रकार वाल्मीकि ने रामायण नामक ग्रन्थ में रामचरित की उपस्थापना से आदर्श मानव चरित्र का वर्णन किया है। वह ही रामायण ग्रन्थ सनातन धर्म का प्राणभूत है।

रामायण की कविता शैली

सर्वप्रथम रामायण काव्य है, उसके बाद धर्मग्रन्थ अथवा अन्य कुछ है। रामायण तो आदि संस्कृत काव्य है। उसके प्रणेता वाल्मीकि हैं। इसमें सरल संस्कृत उपलब्ध है। इस रामायण से ही संस्कृत काव्य का बालरूप निरुपण होता है। प्रायः आदिकवि वाल्मीकि ने अनुष्टुप छन्द से पद्यों की रचना की है। इसलिए कहा गया है- ''वाल्मीकेरुपज्ञा नूनमनुष्टुप छन्दः'' आरम्भ से अन्त तक सर्वत्र रामायण की भाषा विशुद्ध, परिष्कृत और कहीं-कहीं अलंकार मण्डित भी है। रामायण में उपमा-रुपक आदि अलंकारों का वर्णन है। कवि ने कभी भी कथावस्तु के तत्त्व को नहीं छोड़ा। इसलिए कवि ने सर्व कवित्व दर्शाने की इच्छा की है। जैसे हेमन्तवर्णन में काव्य छटा देखें -

''सेवमाने दृढं सूर्ये दिशमन्तकसेविताम्।
विहीनतिलकेव स्त्री नोत्तरा दिक् प्रकाशते।

प्रकृत्या हिमकोशाढ्यो दूरसूर्यश्च साम्प्रतम्।
यथार्थनामा सुव्यक्तं हिमवान् हिमवान् गिरिः॥

रविसङ्क्रान्तसौभाग्यस्तुषारावष्टतमण्डलः।
निश्वासान्ध इवादर्शश्चन्द्रमा न प्रकाशते॥''इति

रावण द्वारा बहुत अधिक प्रार्थना करती हुई सीता को जो कहा वह अति रमणीय काव्य का निर्देशन कराते हैं :

''नाहं शक्या त्वया स्प्रष्टुमादित्यस्य प्रभा यथा।
सिंहस्य खादतो मांसं मुखादादातुमिच्छसि॥

यो रामस्य प्रियां भार्यां बलात्त्वं हर्त्तुमिच्छसि।
त्वं क्षुरं जिह्वया लेक्षि सूच्या स्पृशसि लोचने।
यो रामस्य प्रियां भार्यां पापबुद्धया निरीक्षसे॥''इति

आदिकवि वाल्मीकि ने अशोक वाटिका में स्थित सीता के स्वरुप को उपमा आदि से प्रकाशित किया है :

अभूतेनापवादेन कीर्त्तिं निपतितामिव।
आम्नायानामयोगेन विद्यां प्रशिथिलामिव।

सन्नामिव महाकीर्त्तिं श्रद्धामिव विमानिताम्।
पूजामिव परीक्षीणामाशां प्रतिहतामिव॥ इति

कविता का उद्देश्य लोकहित हो यह बात वाल्मीकि कभी नहीं भूले। इसलिए चरित्र वर्णन में सभी जगह उच्च आदर्श व विचार प्रदर्शित किये हैं :

''कल्याणि बत गाथेयं लौकिकी प्रतिभाति मे।
एति जीवन्तमानन्दो नरं वर्षशतादपि॥'' इति।

इस प्रकार के उपदेश काव्य के माहात्म्य को बढ़ाते हैं। वे इन सभी साहित्यिक गुणों से वाल्मीकि भारतीय काव्य धरा को हिमालय मानते हैं :

''कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्॥''इति।

रामायण में रस

काव्यों के आदर्शभूत रामायण है। कवियों के आदर्शभूत वाल्मीकि हैं ऐसा विद्वान कहते हैं। यदि ''वाल्मीकि नहीं होते तो कवि कैसे होते'' ऐसा निर्णय करना दुष्कर होता। कवि क्रान्तदर्शी होते हैं। वे जो मनोरम तत्व देखते हैं वैसे ही शब्द द्वारा लोक को उपदेश के लिए और मनोरंजन के लिए चित्रित करते हैं। स्वानुभूत वस्तु का शब्द चित्र के रुप में उपस्थापन ही काव्य है। रामायण से पूर्व उपनिषद् आदि में यद्यपि पद्य थे, परन्तु उनमें लौकिक छन्द नहीं थे, वाल्मीकि ही सर्वप्रथम लौकिक छन्दों के अवतारक थे। जब क्रौंचवध का करुण रस देखा, तब ही अकस्मात् इनके मुख से काव्य प्रवाह निकला था। वे इस काव्य में करुण रस को ही प्रधान तत्व मानते हैं। रस ही काव्य की आत्मा होती है। वाल्मीकि काव्य में करुण रस ही मानते हैं। रामायण में करुण रस है। स्वयं आदिकवि वाल्मीकि ने कहा है- जैसा कि ''श्लोकत्वमागत:''। भवभूति भी ''एको रस: करुण: एवं'' ऐसा कहकर काव्य में करुण रस की प्रधानता को स्वीकार करते हैं। वाल्मीकि ने भी अपने काव्य में वैसा ही स्वीकार किया होगा इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। **रामचरित्र की आदर्शता** वाल्मीकि द्वारा अपनी काव्य कला के प्रदर्शन के लिए जिन पात्रों को आधार बनाया वह राम का चरित्र है और उसी को आधार बनाकर कवियों ने सफलता प्राप्त की है। जैसा कि सुना जाता है-

राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है॥

रामचन्द्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श पुत्र, आदर्श शासक और आदर्श मनुष्य थे। ऐसा सब जानते हैं। राम वन में जाकर भी भरत पर संदेह नहीं करते, लक्ष्मण पर आई विपत्ति में स्वयं के प्राणों को तिनके के समान मानना आदि आदर्श भ्रातृता को प्रकट करते हैं। सीता का परित्याग करके भी उसके अनुराग की अग्नि में स्वयं को जलाते हैं। यह राम का आदर्श पतित्व है। पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए राज्य का परित्याग किया, यह आदर्श पुत्रत्व को समझाते हैं। राम राज्य पद आज भी आदर्श राज्य का पर्याय है। यह राम को आदर्श शासक

बनाते हैं। व्यवहार से राम आदर्श मनुष्य थे। वाल्मीकि ने इस प्रकार के चरित्र से अपने काव्य की रचना की।

संसार में कोई भी काव्य रामायण की लोकप्रियता की समता करने में समर्थ नहीं हैं। इसलिए इस का प्रचार भी पूर्ण रुप से हुआ हैं। महाभारत के तृतीयपर्व में राम कथा रामायण से वर्णित हैं। अग्नि-विष्णु-गरुड़-भागवत और ब्रह्माण्ड पुराणों में रामायण के अनुसार ही राम का चरित्र वर्णित हैं। भास, कालिदास आदि महाकवियों ने भी रामायण का आश्रय लेकर काव्यों की रचना की। बौद्ध कवियों ने भी अपने काव्यों में रामायण का आश्रय लिया था।

रामायण आश्रित काव्य

1.	रघुवंश महाकाव्यम्	-	कालिदास
2.	जानकीहरणम्	-	कुमारदास
3.	भट्टिकाव्यम्	-	महाकवि भट्टि
4.	अभिषेकनाटकम्	-	भास
5.	उत्तररामचरितम्	-	भवभूति
6.	बालरामायणम्	-	राजशेखर
7.	रामायणचम्पू	-	भोजराज
8.	श्रीरामचरितमानस	-	तुलसीदास
9.	अनर्घराघवम्	-	मुरारि
10.	प्रतिमानाटकम्	-	भास

पाठगतप्रश्न - 1.1

1. आदि कवि कौन हैं ?
2. आदि काव्य कौन सा है?
3. वाल्मीकि मुनि का काल क्या है?
4. रामायण की रचना किसने की?
5. रामायण में कितने काण्ड हैं?
6. रामायण में कितने श्लोक हैं?
7. रामायण का मुख्य रस कौन सा है?

टिप्पणी

8. रामायण आश्रित एक नाटक का नाम लिखिए।

9. रामायण आश्रित एक चम्पू काव्य का नाम लिखिए।

10. रामायण में नायक कौन हैं?

11. रामायण में कितने सर्ग हैं?

1.2 द्वैपायन व्यास - महाभारत

महाभारत ही भारत वर्ष का द्वितीय राष्ट्रीय महाकाव्य है। महाभारत के प्रणेता कृष्णद्वैपायन व्यास हैं। संस्कृत साहित्य जगत में वाल्मीकि के बाद वेदव्यास अग्रगण्य कवि हैं। व्यासदेव ऋषि थे। अत: वे आर्ष कवि कहे जाते हैं। इस पुरातन कवि ने अपने ग्रन्थ में देशकाल आदि के विषय में कुछ भी नहीं लिखा था। इसलिए इस प्रकार के कवियों के देश-कालादि के विषय में अनुसन्धान यद्यपि कठिन है, किन्तु असंभव नहीं। अन्य ग्रन्थों को देखकर इस प्रकार के प्राचीन कवियों के बारे में देश कालादि का अनुमान किया जाता है।

1.2.1 काल

आज कल उपलब्ध महाभारत, मूल महाभारत के अनेक वर्षों के व्यतीत होने के बाद निर्मित किया गया। अत: मूल महाभारत के बाद 'जय' नाम का ग्रन्थ था जो वर्तमान महाभारत से पूर्वकालिक था। यहां वर्तमान महाभारत का रचना काल विचारणीय है।

11 वीं ई0 में क्षेमेन्द्र ने भरतमंजरी नामक ग्रन्थ लिखा। क्षेमेन्द्र ने महाभारत के उदाहरण दिये हैं। अतएव वर्तमान महाभारत का 11वीं शताब्दी से पूर्वकाल सिद्ध होता है।

8वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उत्पन्न हुए, आदि शंकराचार्य ने स्त्रियों को धर्मज्ञान के लिए, महाभारत का उपदेश दिया है। अत: महाभारत का समय इनसे पूर्व का सिद्ध होता है।

8वीं शताब्दी में उत्पन्न कुमारीलभट्ट महाभारत के बहुत से पर्वों का स्मरण करते हैं।

7वीं शताब्दी में उत्पन्न बाण-सुबन्धु आदि कवियों ने महाभारत के अठारह पर्वो एवं हरिवंश का स्मरण किया हैं।

6ठी शताब्दी के आस-पास भारत के प्राचीन उपनिवेश कम्बोडिया में उत्कीर्ण शिलालेख से ज्ञात होता है कि वहाँ स्थापित किसी मन्दिर में रामायण-महाभारत ग्रन्थों को भारत ने प्रदान किया तथा उस के कथा प्रबन्धन की व्यवस्था भी भारत ने की।

यवन, बालि आदि द्वीपों में 6वीं शताब्दी में महाभारत का अवतरण हुआ। उससे भी पूर्व तिब्बत भाषा में महाभारत का अनुवाद हुआ।

4वीं व 5वीं शताब्दी में लिखित दान पात्रों में महाभारत के कथनों का निर्देश हुआ है।

462 ई0 में उत्कीर्ण शिलालेख में पाराशर व्यास के एकलाखश्लोकात्मक महाभारत के प्रणेता रुप में उल्लिखित हैं।

ड्योन क्राइसोस्तोम (Dion Chrysostom) महोदय के साक्ष्य से प्रतीत होता है कि 50 ई0 में एकलाखपद्यात्मक महाभारत का दक्षिणा पथ में प्रचार था।

इन सभी प्रमाणों से यह सिद्ध है कि प्रथम ई0 के आरम्भ में महाभारत अवश्य थी और पाणिनि, महाभारत को जानते थे ऐसा डल्हमैन महोदय के साक्ष्य से प्रतीत होता है।

5वीं ई0पू0 मे प्रणीत आश्वालयनगृह्यसूत्र में महाभारत का उल्लेख मिलता है।

400 ई0पू0 समय में निर्मित बौधायनधर्मसूत्र में महाभारत का उल्लेख है।

महाभारत के शान्तिपर्व में विष्णु के दशावतार गणना काल में बुद्ध का नाम नहीं आता है।

मेगास्थनीज प्रणीत भारत वर्णन में जिस कथा का वर्णन किया गया वह कथा महाभारत से स्वीकृत है।

महाभारत में ब्रह्मा को सबसे ज्येष्ठ देवता प्रतिपादित किया है। पालि भाषा साहित्य से ज्ञात होता है कि ब्रह्मा का ज्येष्ठत्व 500 ई0पू0 से पहले तक प्रचारित हो चुका था।

कुछ विद्वान ज्योतिष प्रमाणों से यह कल्पना करते हैं कि वर्तमान महाभारत 500 ई0पू0 समय से पहले तक निर्मित हो चुका था, उसके बाद नहीं। अत: सभी समीक्षाओं से महाभारत 500 ई0पू समय के बाद में निर्मित नहीं हुआ, किन्तु कुछ पूर्व में निर्मित हुआ प्रतीत होता है। सम्पूर्ण महाभारत एक काल की कृति है। अत: व्यास 500 ई0पू समय से पूर्वकालिक थे।

1.2.2 कृति

व्यासदेव की पुराण और महाभारत ये दो कृतियाँ सुनी जाती हैं। पुराणों का धार्मिक दृष्टि से अधिक महत्व है। व्यासदेव ने वेदविहित धर्मो का सरलता और सुबोध भाषा से वर्णन के लिए पुराणों की रचना की थी। जब वेदोक्त अर्थ लोगों की बुद्धि में प्रवृत नहीं होता था; तब वेदोक्त अर्थ का ज्ञान सुलभ करने के लिए पुराणों का आगमन हुआ। समाज के तात्कालिक स्वरुप का बोध कराने में भी पुराणों का महान योगदान है। पुराणों में प्राचीन भारत का इतिहास निहित है। इतिहास केवल राजाओं के वृतान्त का बोध कराता है। परन्तु पुराण राजाओं के वृत्तान्त के साथ ऋषियों का भी वृत्तान्त का बोध कराता है। पुराणों में भौगोलिक सामग्री को भी प्रस्तुत किया हैं। पुराणों की विषय वस्तु के सम्बन्ध में कथा सुनी जाती है कि व्यास ने ही वेदों को चार प्रकार से विभाजित करके अपने चारों शिष्यों को उनका उपदेश दिया। उसके बाद यह कथा, आख्यायिका, उपाख्यान, गीत, और लोकवाद के रूप से संग्रह करके पुराण नाम से ग्रन्थ विशेष में ग्रंथित हुई। इतिहास के साथ-साथ इस ग्रन्थ को अपने पांचवें शिष्य लोमर्हषण को पढ़ाया और उसके बाद उन्होंने महाभारत को निबद्ध किया। यह व्यासदेव की दूसरी सुप्रसिद्ध कृति महाभारत है। रामायण की तुलना में यद्यपि महाभारत का प्रचार कम हुआ फिर भी महत्त्व की दृष्टि से महाभारत कम नहीं है। इससे विश्व का कोई भी तत्व अछूता नहीं रहा। महाभारत उस

समय के भारतीय समाज नीति, राजनीति आदि जानने योग्य विषय का बोध कराता है। तथा भारतीय सभ्यता को प्रकाशित करता है। प्रमाणित ग्रंथ की दृष्टि से महाभारत को पंचम वेद की संज्ञा दी जाती है। प्राय: सभी विद्वान यह मानते हैं कि महाभारत प्रारम्भ में ''जय'' नाम से, उसके बाद ''भारत'' नाम से तत्पश्चात् महाभारत के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जैसा कि कहा गया है।

नारायणं नमस्कृत्य नरंचैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्।। इति

मौलिक जय नाम से व्यवहृत महाभारत का अल्पपरिमाण वाले स्वरुप में ऐतिहासिक कथा की प्रधानता थी, न कि उपदेश की। 'जय' नाम का ग्रन्थ पाण्डव विजय मात्र के बोध कराने के लिए निर्माण किया था। इस जय नाम के ग्रन्थ को व्यास ने अपने शिष्य वैशम्पायन को पढ़ाया। वह महाभारत की प्रथम अवस्था थी। उसी का नाम जय था। वैशम्पायन ने गुरु व्यास से पढ़कर जय में स्वविरचित संवादों को जोड़कर नाग यज्ञ के अवसर में जनमेजय को सुनाया। तब उसमें चौबीस हजार श्लोकों के रुप में परिमित हुई। तब इसकी 'भारत' संज्ञा थी। यह इसकी द्वितीय अवस्था थी। इस चौबीस हजार श्लोकात्मक भारत ग्रन्थ को शौनक के लिए सौति ऋषि ने सुनाया। तब इसमें एक लाख श्लोक थे। इस तृतीय अवस्था को ही महाभारत की संज्ञा प्राप्त हुई। यही महाभारत की अन्तिम अवस्था थी।

1.2.3 विषय

महाभारत का शतसहस्री दूसरा नाम है। प्रस्तुत महाभारत पर्वो और अध्यायों में विभक्त था ऐसा अनुमान है। यह विभाजन क्रम वैशम्पायन द्वारा प्रदान किया। उस समय महाभारत उपशत पर्वो में विभाजित थी। सौति ने संख्या संकोच से अठारह पर्व किये। अब अठारह पर्वो के अतिरिक्त हरिवंश नामक पर्व भी है। आज महाभारत में एक लाख श्लोक हैं। यहा कुछ मुख्य पर्वों में निम्न विषय वर्णित है:-

आदिपर्व में धार्तराष्ट्रों और पाण्डवों के बाल्यकाल का वर्णन, द्रोपदी विवाह, यादववीर शौरियों व पाण्डवों का वर्णन है।

सभापर्व में इन्द्रप्रस्थ में पाण्डवों की समृद्धि, द्यूतक्रीडा में पाण्डवों का युधिष्ठिर द्वारा द्रोपदी सहित सब कुछ हारना, एक वर्ष के अज्ञातवास के साथ बारह वर्ष के वनवास के लिए पांडवों का निर्वासन। वनपर्व में काम्यकारण्य में पाण्डवों का बारह वर्ष का वनवास। विराट पर्व में पाण्डवों का गुप्तरुप से मत्स्यराज विराट के सेवक रुप में अज्ञातवास के तेरहवें वर्ष को व्यतीत करना।

उद्योगपर्व में धार्तराष्ट्र पाण्डवों को न्याय के दायभाग प्रदान करने की इच्छा नहीं करते।

इससे आगे के पांच पर्वों में वासुदेव व पाण्डवों को छोड़कर सब के विनाश का कारण भीषण युद्ध का विस्तार से वर्णन है।

ग्यारहवें पर्व में मृतदाह संस्कार करके बाहरवें और तेरहवें पर्व में युधिष्ठिर को भीष्म ने

टिप्पणी

राजधर्म का उपदेश दिया। चौदहवें पर्व में युधिष्ठिर के राज्याभिषेक अश्वमेध नाम के यज्ञ का और पन्द्रवें पर्व में गान्धरी व धृतराष्ट्र का तपोवनगमन, सोलहवें पर्व में यादवों का परस्परकलह और सहसा कृष्ण का व्याधकृत वध, सत्तारहवें पर्व में अर्जुन के पौत्र परीक्षित को प्रजा पालन के कर्म में नियुक्त करने पाण्डवों का मेरु पर्वत के प्रति प्रस्थान अठारहवें पर्व में पाण्डवों का स्वर्गारोहण का वर्णन है।

महाभारत की कविता शैली

व्यास की इस कृति को 'इतिहास' भी कहते हैं क्योंकि इसमें वीरो की पुण्य गाथा वर्णित है। यह ग्रन्थ धार्मिक ग्रन्थ है जिसमें लोक अपने कल्याण को खोजता है। महाभारत में ही गीता रुपी रत्न विद्यमान है। जो दुग्ध के समान पिया जाता है। गीता ग्रन्थ का आदर महाभारत की ही विशिष्टता को प्रमाणित करता है। इसमें शान्त मुख्य रस है। महाभारत में सरल संस्कृत भाषा में पद्य है यथा

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि ग्रह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही॥

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः॥

कतिपय कथा प्राचीन ग्रथों से संयुक्त है। पद्यों के बाहर ''कृष्ण उवाच'' भीष्म उवाच'' आदि वाक्य विद्यमान है। व्यास के मत में तो भारतीय संस्कृति का प्राणभूत धर्म है। इसलिए कहा गया है।

न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्
धर्मं जह्याज्जीवितस्यापि हेतोः।

धर्मो नित्यः सुखदुःखे त्वनित्ये
जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः।

मनुष्य को सदा कर्मशील होना चाहिए। कर्म विमुख मनुष्य कभी भी मानव की पदवी के योग्य नहीं है। जैसा कहा गया है। प्रकाशलक्षणा देवा मनुष्याः कर्मलक्षणाः आधुनिक समाजशास्त्री कहते हैं- मनुष्य ही श्रेष्ठ जीव है। उनके ही कल्याण के लिए सभी नियम व्यवहार प्रवृत होते हैं। इस विषय में व्यास ने कहा है।

''गुह्यं ब्रह्मा तदिदं ब्रवीमि
न हि मनुष्यात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्''।

महाभारत के उपजीव्य

महाभारत के बहुत से नीति वाक्य इस युग में अत्यन्त प्रयोजन पूर्ण हैं। व्यक्ति अनेक प्रकार से दिग्भ्रान्त होते हैं। मानवों को सन्मार्ग पर जाने के लिए महाभारत अन्यन्त उपयोगी है। महाभारत की जनप्रियता भी अत्यन्त है। बहुत से महाकवियों ने महाभारत का आश्रय लेकर बहुत से ग्रन्थों की रचना की।

टिप्पणी

महाभारताश्रित ग्रन्थों के नाम

1. शिशुपालवधम् – माघ (सभापर्व)
2. नैषधीयचरितम् – श्रीहर्ष (वनपर्व)
3. किरातार्जुनीयम् – भारवि (वनपर्व)
4. कर्णभारम् – महाकवि भास
5. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – महाकवि कालिदास
6. वेणीसंहारम् – भट्टनारायण
7. नलचम्पू – त्रिविक्रमभट्ट
8. भारतचम्पू – अनन्तभट्ट

पाठगत प्रश्न-1.2

12. व्यासदेव का काल क्या है?
13. महाभारत किस के द्वारा विरचित है?
14. महाभारत का दूसरा नाम क्या है?
15. महाभारत में कितने पर्व हैं?
16. महाभारत में कितने श्लोक हैं?
17. द्वितीयावस्थापन्न महाभारत का नाम क्या है?
18. प्रथमावस्थापन्न महाभारत का नाम क्या है?
19. महाभारत में मुख्य रस कौन सा है?
20. व्यास की महाभारत के अतिरिक्त कृति कौन सी है?
21. महाभारत आश्रित नाटक कौन सा है?
22. महाभारत आश्रित महाकाव्य कौन सा है?
23. महाभारत आश्रित चम्पूकाव्य कौन सा है?

1.3 भास

संस्कृत साहित्य जगत में नाटककार भास एक उज्ज्वल नक्षत्र हैं। वर्तमान उपलब्ध नाटककारों में भास ही सबसे प्राचीन नाटककार है। कालिदास आदि कृतग्रन्थों में भास का नामोल्लेख

टिप्पणी

अनेक बार दिखाई देता है। भास ने अपनी कृतियों में स्वयं के विषय में कुछ भी नहीं लिखा। अत: भास के कालादि का निरुपण भी अन्य पुस्तकों की सहायता से होता है।

1.3.1 काल

भास का काल निर्णय प्राचीन कवियों एवं लेखकों के लेखों पर अवलम्बित है।

कालिदास ने 'प्रथितयशसां' भाससौमिल्लकविपुत्रदीनाम् कहकर भास की प्रचुर प्रसिद्धि कही है। अत: भास कालिदास से पूर्ववर्ती सिद्ध होते हैं।

अभिनवगुप्त ने अपने ग्रन्थ 'अभिनवभारती' में भास को स्मरण करते हुए उनके नाटक के उदाहरण दिये हैं।

महाकवि भास ने भी अपने प्रबन्ध में कहा है।

त्रैतायुग तदिह हन्त न मैथिली सा,
रामस्य रागपदवी मृदु चास्य चेत:।

लब्ध जनस्तु यदि रावणरुप कायं,
प्रीत्कृत्य तन्न तिलशो न वितृप्तिगामी।।'' इति

बाणभट्ट ने हर्षचरित में भास के विषय में 'सूत्रधारकृतारम्भै:' यह कहा है।

दण्डि ने भी सुविभक्तमुखाद्यंगै:'' कहकर भास को अवन्तिसुन्दरीकथा में स्मरण किया है।

प्रतिमानाटक में बृहस्पति के अर्थशास्त्र का स्मरण किया गया, चाणक्य के अर्थशास्त्र को नहीं। अत: चाणक्य से प्राचीनता सिद्ध होती है।

राजशेखर ने अपने कविविमर्श में लिखा है–

भासो रामिलसौमिलौ वररुचि: श्रीसाहसांक: कविमेण्ठो भारविकालिदासतरलास्कन्ध: सुबन्धश्च य:। अत: भास राजशेखर से भी पूर्ववर्ती सिद्ध होते है।

भरत प्रवर्तित नाटक के नियमों को भास के द्वारा कदापि स्वीकार नहीं किया गया। जैसे स्थापना में कवि के नाम का निर्देश नहीं, अवतरण की स्थापन का निर्देश नहीं, प्रस्तावना का नाम नहीं। नान्दीपाठ के बाद सूत्रधार का प्रवेश, भरतवाक्य के बिना ग्रन्थ की समाप्ति और रंगमंच पर मृत्यु निद्रा युद्धों का अवतरण करना। ये सभी भास की भरत से प्राचीनता सिद्ध करते हैं।

भास ने अपनी कृतियों को पाणिनि व्याकरण के अनुसार नहीं लिखा। कहीं-कहीं तो पाणिनि व्याकरण नहीं था। ये सभी प्रमाण भास को पाणिनि से प्राचीन बताते है।

रस परिपाक महिमा से, भाषा प्रवाह साम्य से भास को व्यास वाल्मीकि के समय के परवर्ती स्थापित करते है।

इन सभी कारणों से भास की प्राचीनता सिद्ध होती है। भास का समय कालिदास से प्राचीन 100 ई0पू का बोध होता है।

टिप्पणी

1.3.2 कृति-

महाकवि भास ने प्राय: तेरह नाटकों की रचना की।

1. प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्	2. अविमारकम्
3. स्वप्नवासवदत्तम्	4. प्रतिमानाटकम्
5. अभिषेकनाटकम्	6. मध्यमव्यायोग:
7. पंचरात्रम्	8. दूतवाक्यम्
9. दूतघटोत्कचम्	10. कर्णभारम्
11. उरुभगम्	12. बालचरितम्
13. दरिद्रचारुदत्तम्	

कुछ विद्वानों के मत में भास ने यज्ञफलम् नामक रुपक भी लिखा था।

नीचे प्रत्येक नाटक का सामान्य परिचय दिया गया है।

1. **प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्** - प्रतिज्ञायौगन्धरायण भास की प्रथम कृति और स्वप्नवासवदत्तम् की पूर्व पीठिका है। इसमें वत्सराज उदयन का वासवदता हरण का वृतान्त वर्णित है। यह चार अंको में विभक्त है। इसका नायक यौगन्धरायण और कथावस्तु का स्वामी उदयन है। शत्रु वशीभूत उदयन को छुड़वाने के लिए यौगन्धरायण प्रतिज्ञा करता है और इस प्रतिज्ञा की पूर्ति करना ही इस नाटक का नामकरण है।

2. **स्वप्नवासवदत्तम्** - छ: अंकों में विभक्त यह रुपक भास की सर्वोत्कृष्ट कृति है। आरुणि वत्सराज्य की भूमि को अपने अधीन कर लेता है। वत्सभूमि के उद्धार के लिए मन्त्री यौगन्धरायण ने प्रतिज्ञा की। वासवदत्ता जल गई इस प्रकार के मिथ्या प्रचार से सभी को ठगकर उदयन का मगधराज पुत्री पद्मावती के साथ विवाह करवाता है उसके बाद मगधराज की सहायता से रूमण्वान् आरुणि को हराकर उदयन को राज्य में पुन: स्थापित करता है। कुछ समय बाद वासवदत्ता पुन: अपने आप को प्रकट करती है। दग्ध ऐसा मानकर वासवदता को उदयन स्वप्न में देखता है। इसी कथा के आधार पर इस ग्रन्थ का नाम ''स्वप्नवासवदत्तम्'' पड़ा। इस कथा का आश्रय लेकर श्रीहर्ष ने रत्नावली नाटिका की रचना की।

3. **अविमारकम्**– अविमारक रुपक में छ: अंक हैं। इसमें काशी युवराज सौवीर राज धर्म पुत्र अविमारक का कुन्तिभोज की राजकुमारी कुरंगी के साथ प्रेमलीला का वर्णन है। इसमें वैसा चमत्कार प्रकट नहीं हुआ। सम्भावना है कि भास अपनी ही व्यथा को यहां प्रकट करते हैं। इस रचना के प्रणेता भास है इसमें भी आपत्ति नहीं है।

4. **चारुदत्तम्**- चारुदत्त नाटक चार अंको में विस्तारित है। इसमें उज्जयिनी के ब्राह्मण चारुदत्त का वसन्तसेना नाम की वेश्या के साथ प्रेम वर्णित है। यह रचना अपनी जाति में

प्रथम है क्योंकि इसमें राजा के अतिरिक्त किसी ब्राह्मण को नायक के रुप में कल्पित किया है। यह भास का अपूर्ण नाटक है। इसमें चारुदत्त के साथ वसन्तसेना का अभिसार निमित्त व्यवस्था पर्यन्त की कथा है। इसका अनुकरण करके शूद्रक कवि ने मृच्छकटिकम् नाटक की रचना की।

5. **प्रतिमानाटकम्**– इस नाटक में सात अंक हैं। इसमें राम वनगमन तक की कथा का संक्षेप में वर्णन है।

6. **अभिषेक नाटकम्**– इस नाटक में छः अंक हैं छः अंकों वाला यह नाटक प्रतिमा नाटक का उत्तरार्ध है। इसमें रामायण की किष्किन्ध से सुन्दर युद्धकाण्ड आख्यान तक की कथा संक्षेप में वर्णित है। इसे ही बालि वध नाम से भी जाना जाता है।

7. **बालचरितम्**– बालचरितम् भागवत कथा आश्रित नाटक है। इसे 'कंसवध' नाम से भी जाना जाता है। इसमें कृष्ण जन्म के आरम्भ से कंस वध तक की कथा वर्णित है।

8. **ऊरुभंगम्**– यह रुपक एकांकात्मक है। इसमें दुर्योधन की ऊरुभंग तक की कथा वर्णित है। संभवतः यह ही संस्कृत साहित्य का प्रथम दुःखान्त नाटक है।

9. **दूतवाक्यम्**– इस नाटक में एक अंक विद्यमान है। यह नाटक श्रीकृष्ण का पाण्डव दूत कथा से सम्बद्ध है।

10. **पंचरात्रम्**– इसमें तीन अंक है। इसमें यज्ञ की समाप्ति पर द्रोण ने दक्षिणा रुप में पाण्डवों के लिए आधे राज्य को देने की प्रार्थना की, दुर्योधन ने भी पांच रात्रियों में पाण्डवों के आगमन की बात कही। द्रोण के प्रयास से पाण्डव वहाँ उपस्थित होते हैं। उसके बाद प्रतिज्ञा अनुसार दुर्योधन पाण्डवों को आधा राज्य देता है। यह कथा महाभारत की कथा के विरुद्ध है।

11. **दूतघटोत्कचम्**– इस नाटक में एक अंक है। इस नाटक में अभिमन्यु के वध के बाद श्री कृष्ण सन्धि प्रस्ताव के लिए घटोत्कच को दूत के रुप नियुक्त करते है। वह कौरवों के पास जाकर शान्ति का प्रस्ताव देता है, किन्तु घटोत्कच कौरवों से अपमानित हुआ। क्रुद्ध होकर प्रतिशोधर्थ युद्ध करने की इच्छा प्रकट करता है।

12. **कर्णभारम्**– इस नाटक में भी एक अंक है। कर्ण का ब्राह्मण रूपधरी इन्द्र के लिए कवच कुण्डल दान देने की कथा है।

13. **मध्यमव्यायोग**– इस व्यायोग में भीम द्वारा घटोत्कच से ब्राह्मण पुत्र की रक्षा करना और भीम का हिडिम्बा के साथ पुनर्मिलन की कथा वर्णित है।

इन तेरह नाटकों के अतिरिक्त भास रचित सात अन्य नाटकों का भी स्मरण किया जाता है। जिनमें वीणावासदत्ता और यज्ञफलम् है। वर्तमान में ये नाटक उपलब्ध नहीं हैं। प्रतिमानाटकम् और अभिषेक की कथा रामायण से, मध्यम व्यायोग, दूतघटोत्कच, कर्णभार, ऊरुभंग एवं दूतवाक्यम् महाभारत की कथा से, बालचरितम् भागवत कथा से और दरिद्रचारुदत्तम् एवं अविमारककविकल्पित कथा से संकलित हैं।

टिप्पणी

पाठगतप्रश्न–1.3

24. भास का समय क्या है?

25. भास रचित एक नाटक का नाम लिखिए।

26. भास के प्राय: कितने नाटक हैं?

27. भास की प्रथम कृति कौन-सी है?

28. स्वप्नवासवदत्तम् में कितने अंक हैं?

29. प्रतिमानाटकम् की कथा का आश्रय क्या है?

30. अभिषेक नाटक में कितने अंक हैं?

31. भास ने महाभारत आश्रित कौन सा नाटक लिखा?

32. कर्णभारम् में कितने अंक है?

33. चारुदत्त किस आश्रय से लिखा गया?

34. पंचरात्रम् नाटक में कितने अंक है?

35. भास ने बालचरितम् नाटक किस आशय से लिखा?

पाठसार

इस पाठ में आदिकवि वाल्मीकि, व्यासदेव और भास के विषय में कुछ संक्षिप्त रुप से समालोचना की गई। वाल्मीकि तो आदिकवि हैं। क्योंकि काव्य के दृष्टान्त रुप से रामायण को उपस्थापित किया। यह रामायण ही भारतीय संस्कृति का प्राणभूत है। प्राय: 500 ई0पू0 से पूर्व रामायण की रचना की गई। इसके बाद महाभारत हमारा राष्ट्रेतिहास है। इस ग्रन्थ के प्रणेता व्यासदेव है। महाभारत ग्रन्थ मानव जीवन की समस्याओं के समाधान के लिए नयन पथ पर ले जाता है। इसलिए हम भारतीयों के लिए ग्रन्थ राज महाभारत ही धर्मशास्त्र का भी कार्य सिद्ध करता है। महाभारत में 18 सर्ग, एक लाख श्लोक है। इस ग्रन्थ में भारतीय धर्म का सुविस्तृत ज्ञान के लिए कौरव व पाण्डवों के युद्ध का वर्णन किया। इस ग्रन्थ का निर्माण 500 ई0पू0 के समय से पूर्व का है। प्राचीन नाटककारों में भास अत्यन्त प्रसिद्ध है। इसके द्वारा लिखित तेरह नाटक संस्कृत जगत में विद्यमान है। महाकवि भास का समय 100 ई0पू0 है। महाकवि भास ने रामायण आश्रित प्रतिमानाटक महाभारत आश्रित मध्यमव्यायोग, भागवत आश्रित बालचरितम् और कल्पितेतिवृत आश्रित चारुदत्त आदि रुपकों की रचना की।

आपने क्या सीखा

- महाकवियों का संक्षिप्त परिचय।
- रामायण एवं महाकाव्य की विषय-वस्तु को जाना।
- भास एवं भास के नाटकों से परिचय।

पाठान्त प्रश्न

1. वाल्मीकि के देश काल कृति के विषय में लघु टिप्पणी की रचना कीजिए।
2. वाल्मीकि की कृतियों के विषय में लघु टिप्पणी लिखिए।
3. रामायण आश्रित ग्रन्थों पर लघु टिप्पणी की रचना कीजिए।
4. रामायण की कविता शैली के विषय में लघु टिप्पणी लिखिए।
5. रामायण के काल के विषय में लघु प्रबन्ध लिखिए।
6. व्यास के देशकालकृति के विषय में लघु टिप्पणी लिखिए।
7. महाभारत आश्रित ग्रन्थों पर लघु टिप्पणी कीजिए।
8. महाभारत की कविता शैली के विषय में लघु टिप्पणी लिखिए।
9. महाभारत के काल के विषय में लघु प्रबन्ध लिखिए।
10. भास के देशकालकृति के विषय में लघु टिप्पणी लिखिए।
11. भास के कृतियों के विषय में लघु टिप्पणी लिखिए।
12. भास के विषय में लघु प्रबन्ध लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1

1. वाल्मीकि	2. रामायण
3. 500 ई0पू0	4. वाल्मीकि
5. सात काण्ड	6. चतुविंशंतिः श्लोक
7. करुण रस	8. प्रतिमा नाटक
9. रामायण चम्पू	10. रामचन्द्र
11. 500 सर्ग	

टिप्पणी

1.2

12. 500 ई0पू0के समय से पहले	13. व्यास देव द्वारा
14. शतसहस्री	15. अष्टादश पूर्व (अठारह पर्व)
16. एक लाख श्लोक	17. भारत
18 जय	19. शान्त रस
20. पुराण	21. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
22. नैषधीयचरितम्	23. नलचम्पू

1.3

24. 100 ई0पू0	25. स्वप्नवासवदत्ताम्
26. तेरह	27. प्रतिज्ञायोगन्धरायण
28. छ:अंक	29. रामायण
30. छ:अंक	31. मध्यमव्यायोग
32. एक अंक	33. कल्पितेतिवृत
34. तीन अंक	35. बालचरितम्